PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 9, ISSUE 2

सांस्कृतिक विकास और अनुवाद की भूमिका

डॉ. नवज्योत भनोत
हिंदी विभाग
डॉ भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय
श्रीगंगानगर (राजस्थान)
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय बीकानेर
(राजस्थान) भारत

भाषा और साहित्य संस्कृति की अभिव्यक्ति के प्रमुख माध्यम हैं जिनके विकास में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज विश्व के बड़े देशों में प्रमुख भाषाओं के साथ-साथ गौण भाषा रूप भी समानांतर चल रहे हैं । मनुष्य अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण अपने परिवेश के अतिरिक्त अन्य समाजो के आचार विचार रहन-सहन रीति-रिवाज भाषा, ज्ञान एवं अनुभूतियों के आदान-प्रदान द्वारा परस्पर समृद्धि प्राप्त करता रहा है।

प्रसिद्ध विद्वान मोनियर विलियम्स ने अनुवाद के लिए सर्वप्रथम अंग्रेजी में ट्रांसलेशन शब्द का प्रयोग किया था जो लैटिन के दो शब्द ट्रांस और लेशन से मिलकर बना है जिसका अर्थ है पार ले जाना यानी एक स्थान बिंदु से दूसरे स्थान बिंदु तक ले जाना। एक स्थान बिंदु स्त्रोत भाषा सोर्स लैंग्वेज और दूसरा स्थान बिंदु लक्ष्य भाषा टारगेट लैंग्वेज है, और ले जाने वाली वस्तु मूल या स्रोत भाषा में निहित अर्थ होता है। प्रसिद्ध अमेरिकी विद्वान युजेन नाईडा के अनुसार, translation consists in the receptor language the closet natural equivalent to the message of the source language अर्थात अनुवाद स्त्रोत भाषा का संदेश पहले अर्थ और फिर शैली के धरातल पर लक्ष्य भाषा के निकटतम स्वाभाविक तथा तुलनात्मक अर्थ प्रकट करता है।

PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 9, ISSUE 2

इस प्रकार मूल भाषा की सामग्री के भावों की पूर्णता की रक्षा करते हुए उसके भाषांतरण द्वारा सार्थक अनुभवों और भाषा को एक भाषा समुदाय से दूसरे भाषा समुदाय में संप्रेषित करना अनुवाद का लक्ष्य है। प्राचीन भारत में गुरु की बातों को शिष्यों द्वारा दोहराने के क्रम में अनुवाद की प्रारंभिक परंपरा देखी जा सकता है।

भारत में इस्लाम धर्म के आने के बाद भारत में अरबी फारसी के प्रभावस्वरूप दोनों की संस्कृतियाँ एक दूसरे में रच बस गई और भारतीय भाषाओं में अरबी फ़ारसी के शब्दों का समावेश हुआ। परिणामस्वरूप फ़ारसी से हिन्दी एवं संस्कृत में तथा हिन्दी और संस्कृत से फ़ारसी में अनुवाद होने लगे। इस प्रकार एक दूसरे की भाषा में अभिव्यक्त मनोभावों को अपनी संस्कृति से संयुक्त कर अनुवाद द्वारा विभिन्न समाजों भाषाओं एवम् संस्कृतियों के बीच सामंजस्य स्थापित किया गया।

अनुवाद की परंपरा के अध्ययन से पता चलता है कि राजा अशोक ने भी बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के लिए अपने दूत अफगानिस्तान ,यूनान ,सीरिया, मंगोलिया, पर्शिया चीन, जापान श्रीलंका में भेजे जिन्होंने उन राष्ट्रों की भाषा में बौद्ध धर्म की प्रचार सामग्री का अनुवाद कर प्रचार किया। ईसा के 300 वर्ष पूर्व रोमन लोगों का ग्रीक लोगों से संपर्क हुआ जिसके फलस्वरूप ग्रीक से लेटिन में अनुवाद हुए ।इसी प्रकार 11वीं 12वीं शताब्दी में स्पेन के लोग इस्लाम के संपर्क में आए और बड़े पैमाने पर यूरोपीय भाषाओं में अरबी का अनुवाद हुआ। भारत में भी विभिन्न जातियों धर्मों ,मतों एवं विश्वासो की साधना को अनुवाद के माध्यम से आत्मसात करते हुए भारतीय संस्कृति का निर्माण हुआ। विभिन्न भाषाओं एवं भाषाओं के साहित्य के सामूहिक अध्ययन से अनेक समाजों की चिंतन धारा संस्कृति एवम् ज्ञान के विपुल भंडार आज हमारे समक्ष है ।सोलहवीं शताब्दी में अनेक यूरोपीय देशों के उपनिवेश के समय भारत के साथ व्यापार के प्रभावस्वरूप हिन्दी और संस्कृत ग्रंथों का यूरोपीय और यूरोपीय भाषाओं के ग्रंथों का अंग्रेजी, फ्रांसीसी और हिन्दी में अनुवाद हुआ,जिससे भारतीय संस्कृति और हिन्दी दोनों का दो चरणों में समानांतर रूप से विकास हुआ।

फ्रांस की क्रांति, यूरोपीय पूँजीवाद, उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद की शक्तियों और उनके खतरों से हम अनुवाद के माध्यम से ही परिचित हुए। पश्चिम के डार्विन, रूसों और लियो

टॉल्सटॉय के विचारों के साथ यूरोप में नवचिंतन का शुभारंभ हुआ था। उसे भारत तक पहुँचाने में अनुवाद का ही योगदान रहा है।

अतः अनुवाद की सर्जनात्मक भूमिका के साथ साथ इसकी प्रासंगिकता को भी नकारा नहीं जा सकता ।

भाषा,साहित्य और संस्कृति के विकास में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विश्व की सभी संस्कृतियों में मौखिक और लिखित साहित्य का अनुवाद निरंतर चलने वाली प्रक्रिया रही है।

लिखित साहित्य की तरह मौखिक साहित्य भी आपसी मेल मिलाप के दौरान एक भाषा से दूसरी भाषा, एक समाज से दूसरे समाज में पहुँचकर अपनी संस्कृति को गतिमान रखता है। कहावतें, चुट्कुले, लोककथाएँ, गीत, लोरियाँ मौखिक भाषा के ऐसे ही रूप हैं जिन्होंने छोटे-छोटे कस्बों, गाँवों, आदि में विकसित होकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान पाई ।इसी क्रम में शताब्दियों से प्रचलित अज्ञात विकास प्रक्रिया से जन्मी पहेलियां टेलर द्वारा संगृहीत Riddles अंग्रेजी भाषा में सुरक्षित है, जो एक प्रकार का मौखिक अनुवाद है ।

इसी प्रकार लिखित साहित्य एक भाषा से दूसरी भाषा में मौखिक माध्यम से यात्रा करता हुया थोड़े परिवर्तन के साथ बहता रहता है। अतः हम कह सकते हैं कि अनुवाद की अवधारणा हमारी मानव सभ्यता के समान ही पुरातन है लिखित अनुवाद की अगर हम बात करें तो भारतीय ग्रंथों के अनुवाद द्वारा अनेक देशों में बौध धर्म, और भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार हुआ। संस्कृत और पालि भाषा से चीनी भाषा में अनुवाद का कार्य पहली शताब्दी से ही शुरू हो गया था। चीनी त्रिपिटक के ताकशों संस्करण में 3360 से अधिक भारतीय ग्रंथों का चीनी में अनुवाद है। अनेक एशियाई देशों में बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति का प्रचार हुआ और इस अनुवाद के माध्यम से संस्कृत और पालि के भाषाई प्रभाव ने वहाँ के लोगो की जीवन शैली को प्रभावित किया।

तिब्बती भाषा में भी भारत की अध्ययन विधा और दर्शन के उत्तम ग्रंथों का अनुवाद किया गया।

PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 9, ISSUE 2

नौवी शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी के बीच कुल मिलाकर 4000 से अधिक भारतीय कृतियों के तिब्बती भाषा में अनुवाद ने तिब्बत में बौद्धिक चेतना को जन्म दिया। चौदहवीं शताब्दी में मंगोल भाषा में भी बौद्ध सूत्रों का अनुवाद शुरू हुआ। तंजूर में 108 खण्डों के अतिरिक्त मंगोल भाषा में व्याकरण, छन्दशास्त्र और आत्मज्ञान आदि भारतीय विषयों की कृतियाँ शामिल हैं। मंगोल विश्वकोश में भारतीय आयुर्वेद और रसायन शास्त्र के अनेक ग्रंथों के भी अनुवाद मिलते हैं। इंडोनेशिया, श्रीलंका, म्यांमार (वर्मा) लाओस, थाईलैंड और कम्पूचिया में भी अनेक संस्कृत तथा पाली ग्रंथों का अनुवाद किया गया जिसके फलस्वरूप भारतीय संस्कृति, धर्म, चिंतन आदि से उन सभी देशों का साहित्य समृद्ध हुआ। जहां सुदूर के पूर्व और दक्षिण-पूर्व में अनुवाद के माध्यम से भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन का प्रसार हुआ वहीं पश्चिम एशियाई देशों में भी अनुवाद साहित्य ज्ञान के प्रसार का माध्यम बना। अरब में खिलाफत अब्बासी वंश ने भारत और अरब के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान का युग शरू किया तो अंकगणित, खगोलशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, ज्योतिष, नैतिक कहानियाँ, राजनीतिशास्त्र, कूटनीति और घरेलू खेलों आदि पर लिखित संस्कृत पुस्तकों के अरबी भाषा में अनुवाद से उसका प्रसार यूरोप तथा अफ्रीका में भी हुआ।

पश्चिमी देशों में साम्राज्यवादी प्रसार के साथ उन्नीसवीं शताब्दी में संस्कृति के इस विश्वव्यापीकरण में अनुवाद का महत्व बहुत बढ़ गया। अनेक संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद पहले अंग्रेजी और फिर हिन्दी में हुआ । अनेक भारतीयों को अपनी विस्मृत संस्कृति का पुनः परिचय संस्कृत ग्रंथों के अंग्रेजी अनुवाद के बाद प्राप्त हुआ।

आधुनिक काल में अनेक साहित्यकारों द्वारा समय-समय पर अनुवाद होते रहें हैं।आधुनिक हिन्दी साहित्य के अग्रदूत भारतेंदु हरिश्चंद्र ने संस्कृत के 'मुद्राराक्षस' और 'रत्नावली' का बंगाली भाषा में अनुवाद किया और अंग्रेजी के 'द मर्चेंट ऑफ वेनिस' का 'दुर्लभ बंधु' नाम से अनुवाद किया। भारतेंदु विविध भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य से चुनी हुई रचनाओं के छोटे-बड़े विषयों को हिन्दी में लेकर आये। शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटकों का गोपीनाथ, मथुरादास चौधरी और लाला सीता राम ने अनुवाद किया। जगन्नाथ रत्नाकर ने पॉप के 'एस्से ऑफ क्रिटिसिज्म' का 'समालोचनादर्श' नाम से अनुवाद किया। उसी समय के प्रमुख रचनाकार

महावीरप्रसाद द्विवेदी जी ने 'बेकन विचार-रत्नावली' में बेकन के अनुदित निबंधों को स्थान दिया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने आर्नोल्ड

के 'लाईट ऑफ एशिया' का अनुवाद 'बुद्धचरित' नाम से किया। प्रसिद्ध कथाकार मुंशी प्रेमचंद ने टैगोर, गाल्सवर्दी, इलियट और लियो टॉल्सटॉय की रचनाओं का तथा हरिवंशराय 'बच्चन' ने 'खैयाम की रुबाइयों' का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किया अनुवाद का क्षेत्र आज के समय मे देश की सीमा को लांघकर वैश्विक हो गया है।वैदिक व्याकरण' 'पाणिनी,' वेद, उपनिषद्, ब्रहमण आदि ग्रंथों को आज हम अनुवाद के माध्यम से आसानी से समझ सकते हैं, गीता, महाभारत, रामायण ग्रंथों के अनुवाद होने के कारण ही हमारी परंपरा और संस्कृति का प्रसार हो रहा है। आज रामचरितमानस का असमिया ,उड़िया ,कन्नड, कुमाऊनी ,गुजराती ,तमिल मराठी, हल्बी, पंजाबी ,सिंधी मैथिली ,हरियाणवी ,उर्दू ,फारसी ,रूसी ,जापानी चीनी में अनुवाद सांस्कृतिक विकास का उदाहरण है।

इक्कीसवीं शताब्दी में संचार के विकास की गति से सभी देशों के बीच प्राचीन और आधुनिक ज्ञान का आदान-प्रदान तेजी से बढ़ा है।आज एक तरफ विश्वभर में लोग भारत के प्राचीन दर्शन, आध्यात्म, संस्कृति और परंपराओं को आत्मसात करने में लगे हैं, वही दूसरी ओर भारत में पश्चिमी संस्कृति का प्रसार हो रहा है।

भारत में अंतरराष्ट्रीय साहित्य का अनुवाद सूफियों के दार्शनिक सिद्धांतों के प्रश्न के साथ आरंभ हो गया था। भले ही इसे व्यवस्थित रूप आधुनिक युग में प्राप्त प्राप्त हुआ ।शेक्सपियर डी. एच. लॉरेंस ,मोपासां तथा सार्त्र जैसे चिंतकों की रचनाओं के अनुवाद से भारतीय जनमानस का साक्षात्कार हुआ। कालिदास, रविंद्र नाथ टैगोर एवं प्रेमचंद की रचनाएं वैश्विक फलक पर पहुंची। प्रेमचंद और गोर्की ,निराला और इलियट तथा राजकमल चौधरी के साहित्य एवं भाषा का तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद के फलस्वरुप ही संभव हो सका, जिसने देशकाल और समय की भिन्नता के बावजूद विभिन्न भाषा भाषी रचनाकारों के साहित्य में साम्य और वैषम्य विश्लेषण से सांस्कृतिक सेतुबंधन का कार्य किया।

अनुवाद किसी भी स्त्रोत भाषा साहित्य के द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताओं , सामाजिक तथा सांस्कृतिक मानकों की स्थापना द्वारा अभिव्यक्ति यात्रा चक्र को लक्ष्य भाषा के माध्यम से गति प्रदान करता है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने अनुवाद की महत्ता को स्पष्ट करते हुए कहते हैं- "जैसे अंग्रेजों ने ग्रीक और लैटिन भाषा की सहायता से अंग्रेजी की उन्नति की और उन भाषाओं के उत्तमोत्तम ग्रंथों का अनुवाद करके अपने साहित्य की शोभा बढाई, वैसे ही हमको भी करना चाहिए"।

भारत में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक विभिन्न भाषा, बोलियों विश्वासों एवं समुदायों में भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता के सूत्र के पीछे सम्प्रेषणीयता की बड़ी भूमिका रही है। मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन से लेकर आज के प्रगतिशील आंदोलन तक भारतीय साहित्य की दिशा अनुवाद द्वारा जानी जा सकी , जिस समय तुलसीदास राम के चरित्र पर महाकाव्य लिख रहे थे हिंदी के समानांतर ओड़िया में बलराम, बांग्ला में कृत्तिवास, तेलुगु में पोतना, तमिल में कम्बन तथा हरियाणवी में अहमद बख्श अपने अपने साहित्य में राम के चरित्र को नया रूप दे रहे थे।

प्रोफेसर जी गोपीनाथन अनुवाद को मानव की मूलभूत एकता की व्यक्ति चेतना एवं विश्व चेतना के अद्वैत का प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हुए अनुवाद को व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकता के रूप में देखते है।,फकीर मोहन सेनापति, प्रतिभा राय, सीताकांत महापात्र आदि अनुवाद की ताकत से ही अपने साहित्य की सामर्थ्य को दिग दिगंत तक विस्तृत कर पाए ।इसी क्रम में लोहार लुत्से का हिंदी मराठी बांग्ला, तमिल तेलुगू, कन्नड़ लेखकों को भारतीय लेखक के रूप में देखना अर्थपूर्ण है।

निष्कर्ष-

बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक राष्ट्र होने के कारण बहुभाषिक शक्ति के रूप में भारत की अपनी पहचान है। स्वतंत्रता के पूर्व भारत में नवजागरण की जो चेतना प्रस्फुटित हुई, उसमें अनुवाद ने अपनी अंतः संप्रेषण प्रक्रिया द्वारा देश-विदेश के नवीन ज्ञान, विज्ञान ,शोध एवम् चिंतन

को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाकर भिन्न संस्कृतियों को एक सूत्र में पिरोकर ,भावात्मक एकता कायम रखने का कार्य किया है।

वर्तमान में विश्विद्यालयों में ज्ञान की शाखा के रूप में विकसित अनुवाद ने विज्ञान ,प्रौद्योगिकी , कृषि,उद्योग ,चिकित्सा,अभियंत्रिकी और व्यवसाय के क्षेत्रों में प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली का भारतीयकरण करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।जे. डब्ल्यू .गेटे कहते हैं, अनुवाद की अपूर्णता के संबंध में चाहे कोई जो भी कहे, परंतु अनुवाद विश्व के सभी कार्यों से अधिक महत्वपूर्ण और महानतम कार्य है।, भारत जैसे बहुभाषी देश के जन समुदायों में अंत संप्रेषण के रूप में अनुवाद का बहुआयामी प्रयोजन सर्वविदित है। आज चिंतन और व्यवहार के स्तर पर ही नहीं बल्कि विश्व संस्कृति विभाग में भी अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज हम विभिन्न साहित्यक आर्थिक,औद्योगिक ,वैज्ञानिक,सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में पारस्परिक विनिमय के बल पर जीवन के विभिन्न स्तरों पर समन्वय कर जीवन को उन्नत बना रहे हैं।

अनुवाद आज व्यवसायिक युग की अनिवार्यता के साथ-साथ भारतीय मनीषा को दूसरों तक पहुंचा कर सांस्कृतिक एकता के परस्पर आदान-प्रदान तथा वसुधैव कुटुंबकम की भावना को साकार करने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान युग में अनुवाद की महत्ता और उपयोगिता भाषा और साहित्य की सीमाओं से आगे बढ़कर चिंतन और साहित्य की संरचनात्मक चेतना को समरूपता से प्रवाहित कर तकनीकी और ज्ञान विज्ञान के आयामों को देश-विदेश से संयुक्त करती है।

अनुवाद वैश्विक संस्कृति, विश्व बंधुत्व की भावना, एकता और समरसता स्थापित करने का ऐसा सेतु है जिसके माध्यम से वैश्विक ज्ञान क्षेत्रीयतावाद के संकुचित एवं सीमित दायरे से बाहर निकलकर मानवीय एवं भावात्मक एकता के केंद्र बिंदु तक पहुंचा जा सकता है।

अनुवाद आज सामाजिक पुनर्व्यवस्था की नवीन स्वतंत्र दृष्टि के साथ वयष्टि, समष्टि, संस्कृति, भाषा के स्वरूप और अर्थ के बदलाव के साथ-साथ संश्लिष्ट संबंधों की व्यापकता द्वारा मानव चेतना की अभिव्यक्ति के बहुमुखी एवं बहुआयामी प्रयोजन सिद्ध कर चुका है। किसी भी समाज और देश की अभिव्यक्ति भाषा की सीमा के कारण एक विशेष क्षेत्र तक

सीमित न रहे,सभी अपने चिंतन और व्यवहार के स्तर पर अपनी सीमाओं का विस्तार कर उससे लाभान्वित हो सकें इसीलिए आज हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुवाद के आग्रही हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. अनुवाद विवेचन -भारती गोरे

2. साहित्य और परिवेश -ब्रिजेंद्र त्रिपाठी

3. भारतवंशी-भाषा एवम् संस्कृति -पुष्पिता अवस्थी

4. भारतीय साहित्य में अनुवाद की भूमिका- डॉ वेंकटेश्वर साहित्य कुंज 8जनवरी2019

5. भारतीय संस्कृति के अनुवाद की भूमिका -मेरी रचनाएं अभिव्यक्ति 10/12/202 Indu0169@Gmail.com

6. 'सरस्वती' पत्रिका भाग-४ (हिंदी भाषा और उसका साहित्य- ले. महावीर प्रसाद द्विवेदी, सं. फरवरी-मार्च, १९०३)

7. डॉ. पी. जयरामन - भाषा - त्रैमासिक

8. अनुवाद प्रक्रिया, डॉ. रीतारानी पालीवाल